पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

ममता कालिया की कहानी काली साड़ी में अभिव्यक्त स्त्री-जीवन

बर्णाली खाउंड
शोधार्थी, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, मिजोरम
ईमेल: bornalikhound73@gmail.com

शोध-सारांश : नए परिवेश में हिन्दी कहानी ने नयी दिशा ली। कथा साहित्य के केंद्र में नारी को प्रतिष्ठित किया गया। स्वतंत्र्योत्तर परिवेश में साहित्य के अन्य विधाओं के साथ-साथ कहानियों ने भी अपनी जगह बनाने में सफलता प्राप्त की। इनमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि कथा साहित्य के केंद्र में नारी ने प्रतिष्ठा पायी। युगों से प्रताड़ित भारतीय नारी के अंदर निजी अस्मिता को बुलंद करने का काम कहानियों ने किया। महिला कहानीकारों ने महिलाओं के दुख-दर्द, संघर्ष एवं समस्याओं की गाथा को अपनी रचनाओं का साधन बनाया। इसी दौरान ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में भारतीय नारी की जीवन गाथा को शब्दबद्ध करने की कोशिश की। उन्होंने परंपरागत स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को नकारकर सुशिक्षित नारी की संवेदनाओं को उभारने का प्रयास अपने रचनाओं के जरिये किया है। उनके नारी पात्रों की खासियत यह है कि वे अपनी सहज अनुभूतियों को साहसपूर्वक वहन करने में सक्षम है। उनके नारी पात्र अपने परंपरागत अबला स्वरूप को छोड़ आधुनिक सबला स्वरूप ग्रहण करने में सक्षम है। ममता कालिया ने नारी जीवन के विविध पक्षों को सूक्ष्मता से पहचाना है। उनकी कहानियों में शिक्षित मध्यवर्गीय स्त्री की आशाओं, आकांक्षाओं, संघर्षों और स्वप्नों का यथार्थपरक अंकन हुआ है। स्त्री के प्रति परम्परागत दृष्टिकोण को वह नकारती है।

सूचक शब्द: पितृसत्ता, मानसिकता, आकांक्षाओं, संघर्ष, पारंपरिक दृष्टिकोण

ममता कालिया हिंदी साहित्य में एक प्रयोगशील कहानीकार के रूप में जानी जाती हैं। ममता कालिया ने अब तक लगभग 200 से अधिक कहानियों की रचना की हैं। ममता कालिया की कहानियों के केंद्र में विशेष कर स्त्री जीवन है। उनकी कहानियों में चित्रित स्त्रियां भी भिन्न हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के जरिये स्त्री की संवेदना और आकांक्षाओं को वाणी दी है। ममता कालिया की कहानियां समसामयिक सन्दर्भ से जुड़ी हुई है और साथ ही अपने समाज की शाश्वत पहचान करती है। उनकी कहानियों की विशेषता उनकी बेबाक सोच है। ममता कालिया के कहानियों के बारे में प्रकाश मनु लिखते हैं- "ममता कालिया और मृणाल पांडे की कहानियां भी जीवन की त्रासदी और स्त्री की वेदना के बहुत से छोरों से अटकती आगे बढ़ती है। पर वे कहानियां अन्य महिला कथाकारों की तरह अतिरिक्त गंभीर नहीं है या कम से कम ऊपर से ऐसी नहीं लगती। इसके बजाय वे

एक प्रकार से उच्छल खिलंदड़ेपन से काम लेती है और एक तरह के व्यंग्यात्मक तेवर या तेज के साथ जीवन केविचित्र विडम्बनाओं को खोलती है असल में ये वे कहानियां हैं जो नए जमाने की एक नई बनती हुई स्त्री की अलग-अलग छवियाँ हमारी आँखों के आगे रखती है।" (तिवारी, 2005, पृ. 123)

ममता कालिया खुद अपनी कहानियों के बारे में कहती हैं- "निज के और समय के सवालों से जूझने की तीव्र उत्कंठा और जीवन के प्रति नित-नूतन विस्मय ही मेरी कहानियों का स्त्रोत रहा।" (कालिया, 2013, पृ. 7) ममता कालिया की कहानियाँ स्त्री चेतना को रेखांकित करती हैं और इनमें पति-पत्नी के संबंध के साथ-साथ आधुनिक नारी की मनःस्थिति का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। ठीक उसी प्रकार प्रस्तुत कहानी में भी ममता कालिया ने पति-पत्नी का संबंध और पढ़ी-लिखी, आत्मनिर्भर आधुनिक नारी जीवन को दिखाया है। 'काली साड़ी' कहानी 'प्रतिदिन' कहानी संग्रह में प्रकाशित हुई थी। 'प्रतिदिन' कहानी संग्रह का प्रकाशन वर्ष 1998 है। इस संग्रह में कुल 10 कहानियाँ हैं। इस संग्रह में शिक्षित मध्यवर्गीय नारी की आशाओं, आकांक्षाओं, संघर्षों और स्वप्नों का यथार्थपरक अंकन हुआ है। नारी के प्रति परम्परागत भारतीय दृष्टिकोण को नकारते हुए वे किन्हीं पतनशील जीवन मूल्यों को स्वीकार नहीं करती बल्कि समाज के स्वस्थ जीवन मूल्यों को आत्मसात करती हुई उन्हें नई सामाजिक अर्थवत्ता प्रदान करती है। घर की चारदीवारी में कैद नारी की मुक्ति आकांक्षा और उसका संघर्ष ममता कालिया की अधिकांश कहानियों का प्रस्थान बिंदु है, जिसके आस-पास वे समूचे कथानक को बुनती हैं। इस संग्रह की कहानियां भारतीय नारी के संघर्ष और उसकी छटपटाहट को मार्मिक प्रसंगों के माध्यम से उद्घाटित करती है।

प्रतिदिन कहानी संग्रह की पहली कहानी है- 'काली साड़ी' कहानी के शीर्षक से ही हम समझ सकते हैं। यह कहानी आरम्भ होती है, एक काली साड़ी को लेकर और अंत भी होती है उसी साड़ी पर। इस कहानी की नायिका कल्पना एक निम्न मध्यवर्गीय विवाहिता स्त्री है, जो एक स्कूल में काम करती है। कल्पना का पति विनोद जो उसे बेहद प्यार करता है, उसकी हर सुख-दु:ख का ख्याल वह रखता है। विनोद कल्पना की बहुत परवाह करता है। कभी भी उसने डट-डपट नहीं किया है कल्पना से और न ही कोई शक-शुब्हा। अगर कभी कल्पना थकी हुई होती है तो कभी उसको तंग नहीं करता बल्कि पाव रोटी खाकर उसके खाना बनाने का इंतजार करता है और अगर कभी वह ऊबी होती है तो बच्चों को खाना खाने के लिए ढाबे में ले जाता है। विनोद का इसी प्यार के कारण कल्पना खुद को कभी-कभी रानी-महारानी जैसा महसूस करती है।

कल्पना बाहर से जितनी खुश है उतनी ही अंदर से एक घुटन में जी रही है। कारण वह अन्य स्त्रियों से थोड़ी काली है। इसी सोच में वह अपने मनपसंद साड़ी भी नहीं पहनती। वह अक्सर काला, कॉफी, नेवी ब्लू और उन्नावी रंगों के प्रति आकर्षित होती है लेकिन वह सोचती है कि उसे हल्के खुशनुमा रंग फबते हैं जैसे नीला, पीला, गुलाबी। वह एक कामकाजी औरत है साथ ही एक माँ है। इन्हीं सबमें पड़ते-पड़ते खुद के लिए सोचने का उसके पास समय ही नहीं है। समय की पाबंदियों के कारण वह अच्छी साड़ी भी नहीं खरीदती है बल्कि नाइलॉन की साड़ी खरीदती है ताकि इस्तरी करने की नौबत नहीं आए। वह किसी भी पर्व या त्योहारों में जैसे होली, दीपावली में भी कपड़ा नहीं खरीदती है। बच्चों को नया कपड़ा देकर ही वह खुश होती है।

ममता कालिया इस कहानी में कल्पना जैसे चरित्र के जीवन तक ही सीमित नहीं रही बल्कि कल्पना के जरिए अन्य दो-तीन स्त्रियों के जीवन को भी उन्होंने चित्रित किया है। स्त्री का जीवन अलग-अलग परिवेश और संदर्भों में किस तरह भिन्न हो जाती है, उनकी जीवन शैली भिन्न होती है उसका चित्रण भी हुआ है। जैसे दो स्त्रियाँ मिसेज गुप्ता और कल्पना की बहन का भी इस कहानी के अंतर्गत उल्लेख हुआ है। कल्पना की बहन जब साल-दो-साल में मायके आती है तो एक न एक नया सोने का गहना लेकर आती है। दो चार दिनों के लिए मायके आती है और आते ही वापसी का फर्स्ट क्लास रिज़र्वेशन करा लेती है और दस-बीस रुपये छोटे भाई-बहनों पर खर्च करती है। लेकिन कल्पना के क्षेत्र में यह बिल्कुल उल्टा है, वह छुट्टियाँ शुरू होते ही हर साल अपने बच्चों को लेकर माँ के घर पहुँच जाती है और वही पड़ी रहती है जब तक विनोद वापसी के लिए पैसा नहीं भेजता। जहां उसकी बहन छोटे भाई-बहन पर पैसा खर्च करती है वहीं कल्पना पैसा बचाती है। छुट्टी के बाद जब स्कूल खुलता है और टीचर्स आपस में कल्पना से पूछती है- "तुम कहीं बाहर गयी थी?" (कालिया, 2000, पृ. 13) तब वह गर्व से कहती है "हाँ माँ के यहाँ गए थे, वहाँ से देवघर चले गए, बड़ी ठंडक में छुट्टियाँ गुजरी।" (कालिया, 2000, पृ. 19)

दूसरी ओर है, मिसेज कश्यप जिनके चेहरे पर हमेशा अंधेरा छाया रहता है। जितना वेतन मिलता है उतने का ही श्रृंगार का सामान खरीदती है लेकिन कभी भी गर्दन उठाकर बात नहीं करती है। सारे शहर को पता है उनका विवाहित जीवन सुखी नहीं है। उनके पति अपने वेतन में से एक भी पैसा खर्च नहीं करते यहां तक अपनी आलमारी में ताला लगाकर चाबी अपने पास रखकर ही सो जाते हैं । यहाँ कल्पना का जीवन, पैसों से परिपूर्ण नहीं होते हुए भी सम्मानजनक है।

एक दिन जब कल्पना बाहर गयी तब उसकी आँखें एक काली साड़ी पर पड़ी जो बहुत ही खूबसूरत थी। साड़ी शिफॉन की थी और उस पर पीले रंग से कशीदाकारी की गयी थी। काली साड़ियां कल्पना को भी बहुत पसंद है, लेकिन अपने शरीर के संग के कारण वह काली साड़ी नहीं पहनती है। काली साड़ी को देखते-देखते वह सोचने लगी और अपने पर्स की ओर देखने लगी, जहाँ ज्यादा पैसा भी नहीं था। पर्स देखते ही कल्पना अपने आपको समझाने लगी- "चलो चलो, आगे बढ़ो, तुम्हें तो यह कतई सूट नहीं करेगी। कार्टून लगेगी।

साड़ी देखने के बाद उसे अपनी तमाम गोरी सहेलियां याद आयी जिन पर वह साड़ी फब सकती है। कल्पना बहुत सारी ख्वाहिशें जुटा कर जी रही है जैसे- एक बार दिल खोलकर अपनी सब सखियों पर उपहार लुटाने की। उत्सव पर्व की प्रतीक्षा किए बगैर वह एक दिन वह उन्मुक्त खिलखिलाना चाहती है। अपनी सखियों के साथ चिलचिलाती धूप में वह स्कूल के बजाय पिक्चर जाना चाहती है, बेमतलब तू-तड़ाक गप्पे मारना चाहती है जिनमें नाम के पीछे ये 'जी-जी' की दुमें न लटके। यही सब सोचते सोचते उसे उज्ज्वला की याद आयी जो उसकी सहेली है। कल्पना सोचने लगी कि वह साड़ी उज्ज्वला पर कितनी खूबसूरत लगेगी जैसे ताजमहल पर स्याह नकाब। दुकान से घर लौट आने के बाद भी कल्पना उज्ज्वला के बारे में सोचने लगी। उज्ज्वला कुछ इस कदर सुंदर है कि उसके सामने अन्य सभी सुंदर चीजें व्यर्थ लगने लगती हैं यहां तक पैसा भी।" (कालिया, 2000, पृ. 12)

कल्पना के खुद के पास इतनी सुंदर साड़ी थी फिर भी उसने उज्ज्वला को वह साड़ी भेंट करने के लिए संकोच नहीं किया। कल्पना के अनुसार त्याग में ही सुख है और उसने एक बार नहीं अनेक बार त्याग किया है। बचपन में हमेशा उसने उतरन पहनी है और जूठन खायी है। बड़ी होने पर गांधी जी का आदर्श अपनाया 'सादा जीवन उच्च विचार' और अब नेहरू जी के आदर्श पर जिंदगी जी रही है 'आराम हराम है'। कई बार उसे लगता है सिद्धांत सब उसके हिस्से पड़े है, सुख किसी और के। जैसे-तैसे पैसे जुटाकर कल्पना ने वह काली साड़ी खरीद ली। पूरे सौ रुपये देकर उसने वह साड़ी खरीदी जिसमें विनोद का बोनस भी चला गया। उसने उज्ज्वला को देने के लिए साड़ी खरीद तो लिया लेकिन घर आकर वह दुखी हो गयी और विनोद को फटकारने लगी यह कह कर की क्यों उसने साड़ी के लिए पैसा दे दिया? साड़ी बहुत महंगी हो गई और किसी को बेवजह वह साड़ी देने का जी नहीं कर रहा। कल्पना को दुखी देखकर विनोद ने वह साड़ी कल्पना को रख लेने के लिए कहा तब कल्पना बोली- "पर मैं तो काली हूँ?" (कालिया, 2000, पृ. 19) फिर विनोद कहने लगा-"कौन कहता है मुझे तुम्हारा रंग बहुत पसंद है,चाय और चॉकलेट के बीच का। ऐसा रंग पाने के लिए विदेश में सुंदरियां घंटों सूर्य स्नान करती है।" (कालिया, 2000, पृ. 12)

इस कहानी के जरिए ममता कालिया ने निम्न मध्यवर्गीय नारी के जीवन को चित्रित किया है जो अंतर्द्वंद्व में जी रही है। जो अपने रंग को लेकर भी चिंतित रहती है। वर्तमान समाज जितना भी आगे बढ़ रहा है लेकिन भौतिकता को लेकर लोगों की मानसिकता आज भी एक ही स्थान में टिकी हुई है। इस कहानी के जरिए ऐसी स्त्री को सामने लाया गया है जो आधुनिकता को तो अपना रही है किंतु अपने परंपरा को नहीं छोड़ रही जैसे कल्पना कहती है- "त्याग में ही सुख है।"[8] साथ ही मिसेज गुप्ता जैसी स्त्री के जरिए ममता कालिया ने समाज के अन्य स्त्रियों के ओर संकेत किया है जो हर प्रकार के सुख लाभ करके भी मानसिक रूप से सुखी नहीं होती, पारिवारिक सुख से वंचित होती है। अक्सर स्त्रियों के साथ यह स्थितियां तब बनती है जब वह अपने को नहीं जान और समझ पाती है, अपने जीवन को अपने ढंग से जीना भी चाहती है और कई सोच उसके उस चाहत में बाधक भी बनती है, अपने और ज़माने के मध्य सामंजस्य बिठाते हुए अक्सर अपनी खुशियों के प्रति रुसवाई कर जाती है जबकि इस निर्णय पर भी उसका मन कायम रह नहीं पाता है इसलिए परिस्थितियां उसके जीवन में परेशानी तो लेकर आती है पर खुद भी अपने जीवन में परेशानियों का अक्सर वह कारण भी बन जाती है। इसलिए एक द्वंद्व वाली मनस्थिति से वह कभी मुक्त रह नहीं पाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद .(2005) .*बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य* .नई दिल्ली :भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन .

कालिया, ममता .(2013) .*दस प्रतिनिधि कहानियाँ* .नई दिल्ली :किताबघर प्रकाशन .

कालिया, ममता .(2000) .*प्रतिदिन* :नई दिल्ली.राजकमल प्रकाशन.